ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 4 अंक : 4 अप्रैल - मई 2014 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

मोहिनी एकादशी	डा. महेश पारासर	2
महिलाओं के लिए वर्जित नहीं हनुमान साधना	डा. रचना के भारद्वाज	4
सहज द्रवित हो जाता है कुंभ वाला	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
कामदा एकादशी व्रत	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	6
वास्तु अनुसार ड्राइंगरूम करें फिट	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	7
विद्या प्राप्ति के योग, समस्या व समाधान	पं. अजय दत्ता	8
धन–प्राप्ति योग	सीता राम सिंह	10
ज्योतिषम् वेदांना चक्षुः	सुरेश अग्रवाल	11
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	14–15
जब हनुमान से हारे शनि	पूनम दत्ता	16
धूर्त ठग	विजय शर्मा	17
पूजा – सामिग्री		23

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार के विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

मोहिनी एकादशी

मोहिनी एकादशी वैशाख मास में शुक्ल पक्ष की एकादशी को मनायी जाती है। इसी दिन भगवान पुरूषोत्तम राम की पूजा की जाती है। भगवान की प्रतिमा को स्नानादि से शुद्ध कराकर श्वेत वस्त्र पहनाये जाते हैं। इसके बाद प्रतिमा को किसी ऊँचे स्थान पर रखकर धूप, दीप से आरती उतारी जाती है। आरती के बाद मीठे फलों द्वारा भोग लगाकर सभी श्रद्धालुजन में प्रसाद के रूप में बाँटा जाता है। इसके बाद ब्राहाण को भोजन तथा दान–दक्षिणा देनी चाहिए। रात्रि में भगवान का कीर्तन करके मूर्ति के समीप ही शयन करना चाहिए। एकादशी व्रत के प्रभाव से निंदित कार्यों से छुटकारा मिल जाता है।

मोहिनी एकादशी व्रत की कथा

सरस्वती नदी के तट पर भद्रावती नाम की नगरी स्थित थी। उसमें धृतनाभ नाम राजा राज्य किया करता था। उसके राज्य में एक धनवान वैश्य रहता था। वह बड़ा धर्मात्मा और विष्णु भगवान का अनन्य भक्त था। उसके पाँच पुत्र थे। बड़ा पुत्र महापापी था। जुआ खेलना मद्यपान करना, परस्त्री गमन, वेश्याओं का संग आदि नीच कर्म करने वाला था। उसके माता–पिता ने उसे कुछ धन, वस्त्राभूषण देकर घर से निकाल दिया। आभूषणों को बेचकर कुछ दिन उसने काट लिये। अन्त में धनहीन हो गया और चोरी करने लगा। पुलिस ने उसको पकडकर बंद कर दिया, दण्ड अवधि समाप्त होने के पश्चात् उसे नगरी से निकाल दिया गया। वह वन में पशु–पक्षियों को मारता तथा उनको खाकर अपना पेट भरता था। एक दिन उसके हाथ एक भी शिकार न लगा। वह भूखा प्यासा कौडिन्य मुनि के आश्रम आया और मुनि के आगे हाथ जोड़कर बोला हे मुनिवर मैं आपकी शरण में हूँ मैं प्रसिद्ध पातकी हूँ कृपया आप मुझे कोई ऐसा उपाय बताइये जिससे मेरा उद्धार हो। आप पतित पावन हों। मुनि बोले वैशाख मास की शुक्ल पक्ष की एकादशी का व्रत करो, अनन्त जन्मों के तुम्हारें सारे पाप नष्ट हो जायेगे। मुनि की शिक्षा से वैश्य कुमार ने मोहिनी एकादशी का व्रत किया और पापरहित होकर विष्णुलोक को चला गया। इसका महात्म्य जो कोई भी सुनता या पढ़ता है उसको हजारों गौदान का फल मिलता है और पुण्य प्राप्त होता है।

मृत्यु के समय तुलसी दल और गंगाजल क्यों?

तुलसी में पारा एंव स्वर्ण की कुछ मात्रा होती है। गंगा की उपयोगिता तो सुविदित ही है। एक बार किसी विदेशी ने पूछा यमुना, सरस्वती, शिप्रा इन सबका जल पवित्र है तो क्या गंगा का जल भी पवित्र है? तो उन्हें बताया गया गंगा का जल तो अमृत है। गंगा का जल अमृत होने के साथ साथ दोषनाशक भी है। मृत्यु का समय समीप जानकर आप अमृत नहीं देंगे तो क्या देंगे? इसलिए अंतिम समय में गंगाजल से बढकर अन्य कोई कल्याणकारी महौषधि नहीं हो सकती है।

बिल्ली का मार्ग काटना अशुभ क्यों?

बिल्ली छींक गई। बिल्ली रास्ता काट गई। बिल्ली दिख गई। बिल्ली मुंह मार गई। यह सब अशुभ, अप्रिय कार्य होने के सूचक हैं। आप इन्हें पूर्व, संकेत की श्रेणी में भी रख सकते हैं। बिल्ली और कुत्ते की आदत में अंतर होता है। कुत्ता सोचता है, स्वामी का कुछ बचे तो मैं खाऊं और बिल्ली सोचती है, स्वामी की आँख हटे तो मैं खाऊं। यही अंतर कुत्ते को स्वामी भक्त और बिल्ली को धूर्त, चालाक की श्रेणी में रखते हैं। हमारी परम्परा में धूर्त सदैव से निंदा और धिक्कार का पात्र रहा है। इसी कारण बिल्ली को अशुभ माना गया है। वैसे भी बिल्ली को शैतान की खाला कहा गया है।

अमृत वचन

कोई भी गुरू मार्ग दिखा सकता है किन्तु चलना तो स्वंय को ही पड़ेगा। कोई भी गुरू पहुँचा नही सकता।

उत्तम व्यक्ति सेवा खोज लेता है, मध्यम व्यक्ति संकेत पाकर सेवा करते है, तीसरे नम्बर के व्यक्ति आज्ञा पाकर सेवा करते हैं।

ठोकर खाकर संभल जाना जागरूकता की निशानी हैं।

पाठकों के पत्र

परम् श्रद्धेदय पारासर जी,

मैं आपकी पत्रिका का विगत 7 सालो से पठन कर रहा हूँ। इस पत्रिका के माध्यम से मुझे ज्योतिष व वास्तु में बहुत रूचि पैदा हो गई है। वर्तमान में मै ज्योतिष की शिक्षा ग्रहण कर रहा हूँ।

मेरा आपसे विनम्र निवेदन है कि पत्रिका में ज्ञान वर्धक लेख प्रकाशित करते रहें जिससे मुझे ज्योतिष पढने और समझने में सहायता प्राप्त हो।

सधन्यवाद

श्री राधा रमण शर्मा, आगरा।

आदरणीय पारासर जी,

भविष्य निर्णय का फरवरी–मार्च का अंक प्राप्त हुआ। पत्रिका का विशेषांक बहुत ही ज्ञानवर्धक था। सम्पादकीय लेख बहुत अच्छा लगा। विशेषांक संग्रह करने योग्य था।

विद्या चरण शुक्ला, अलीगढ़

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न1. क्या मेरा रूका हुआ धन प्राप्त होगा? उपाय बतायें

अनिल शर्मा, आगरा

उत्तर– आपकी कुण्डली के अनुसार अगस्त 2014 के बाद आपका रूका हुआ धन प्राप्त हो जायेगा। उपाय स्वरूप पक्षीयों को दाना चुगाते रहें।

प्रश्न2. मेरा पति से तलाक का केस कब तक खत्म होगा?

कामनी बंसल, मथुरा

उत्तर–सप्तमेश नीच का होकर अस्त है। सप्तम भाव पर क्रूर ग्रहों की दृष्टि भी है। राहु–केतु की शान्ति करवायें। शनि की पूजा करें। मंगल त्रिकोण यंत्र व कात्यायनी यंत्र की पूजा करें। आपका 2017 में तलाक हो जायेगा।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– 1. अपने मकान का नक्शा भेज रहा हूँ घर में सभी मानसिक तनाव में रहते है। उपाय बतायें।

योगेश गुप्ता, अलीगढ

समस्या– आपके घर में पूर्व–उत्तर दिशा में शौचालय बना हुआ हैं। जिसकी बजह से मानसिक तनाव लम्बी गम्भीर बीमारी व व्यय की स्थिति बनी रहेगी। इसे वहाँ से हटा कर पश्चिम या पश्चिम मध्य में ले जाये। तुरन्त आराम मिलेाग।

समस्या– 2. मेरा पत्नी से वैचारिक मतभेद रहता है व हम दोनों ही तनाव गस्त रहते है। मार्ग दर्शन करें। घर का नक्शा संलग्न है।

विष्णु राय, बुलंदशहर

समस्या– आपके घर में पश्चिम मध्य में रसोई घर स्थित है। जो आप दोनों के मध्य वैचारिक मतभेद पैदा कर रहा है। खाना बनाते समय मुँह दक्षिण दिशा की ओर होता है। आग और पानी पास–पास है। जिस वजह से वैचारिक मतभेद व तनाव बना रहता है। रसोई को पूर्व–दक्षिण या दक्षिण मध्य में स्थानान्तरित करे। अवश्य ही आराम मिलेगा। खाना बनाते समय मुँह की ओर रखे। **पं. अजय दत्ता**

मो. 9319221203

महिलाओं के लिए वर्जित नहीं
हनुमान साधना

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

प्रायः कहा जाता है कि स्त्रियों को हनुमान जी की पूजा नहीं करनी चाहिए क्योंकि हनुमान जी ने जानकी जी को माता माना है। किंतु यह मान्यता तर्कसंगत नहीं है, न ही शास्त्रों में इसका कोई निषेध है। यदि स्त्रियों को हनुमान उपासना नहीं करनी चाहिए तो पुरूषों को भी लक्ष्मी की पूजा नहीं करनी चाहिए। किंतु ऐसी कोई वर्जना नहीं है और पुरूष लक्ष्मी की पूजा करते हैं। फिर स्त्रियों को हनुमान उपासना से क्यों रोका जाये, वह भी तब जब शास्त्रों में इस तरह की कोई वर्जना नहीं है। जैसा कि ऊपर कहा गया है। अतः स्त्रियां भी पुरूषों की तरह हनुमान जी की पूजा उपासना कर सकती हैं तथा मंदिर जाकर प्रसाद भी चढ़ा सकती हैं। केवल लंबे अनुष्ठान करने में प्राकृतिक बाधा आती है। उनके रजस्वला होने से अनुष्ठान खंडित हो जाता है। दूसरे पारिवारिक उत्तरदायित्व भी उनके लंबे अनुष्ठान में विघ्न डालते हैं। अतः वे हनुमान चालीसा के प्रतिदिन 5 या 10 पाठ कर 20 या 10 दिन में 100 पाठ का अनुष्ठान कर सकती हैं। (जो सतबार पाठ कर कोई। छूटहिं बंदि महासुख होई।) अथवा अपने कष्ट/संकट संबंधी हनुमान चालीसा की चौपाई के 100 माला जप कर यथोचित लाभ उठा सकती हैं। इसकी हर चौपाई और दोहा सिद्ध है।

उदाहरणार्थ, संकट निवारण के लिए ''संकट कटें मिटें सब पीरा। जो सुमिरे हनुमत बलबीरा।'' या ''संकट से हनुमान छुड़ावें। मन क्रम वचन ध्यान जो लावें।'' भूत–प्रेत बाधा या बुरे स्वप्न से निवृत्ति के लिए ''भूत पिशाच निकट नहीं आवे। महावीर जब नाम सुनावें।।'' का जप रामबाण है। इसी प्रकार रोग निवारण के लिए।''नासे रोग हरे सब पीरा। जपत निरंतर हनुमत बीरा।'' के निष्ठापूर्वक जप को अमोघ माना गया है। ऐसे जप पुरूष भी कर सकते हैं।

किस स्थल पर कौन से ग्रह का निवारण होता है।

1. मेंहदीपुर राजस्थान के बालाजी यहां मुख्य रूप से भूत–प्रेत पीडितों को तुरन्त लाभ होता है।

2. सालासर चुरू राजस्थान के बालाजीः भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण करते है।

3. वाराणसी का संकटमोचन मंदिरः संकट निवारण और धन प्राप्ति हेतु पवित्र स्थल है।

4. हनुमानगढी अयोध्या मंदिर यहां पूजा–अर्चना करने से अभीष्ट सिद्धि और भीषण रोगों से मुक्ति मिलती है।

5. श्री हनुमान धारा चित्रकूट यहां मन के सभी संताप नष्ट हो जाते है।

6. भूशायी हनुमान जी प्रयाग रोगशमन और कार्यसिद्धि हेतु पवित्र स्थल है।

7. हनुमान चटटी बद्रीनाथ हनुमान जी की तपोभूमि वाले स्थल काम और क्रोध से मुक्ति के लिए उपयुक्त माना जाता है।

8. पंचमुखी हनुमान जी पोरबंदर शत्रु पर विजय युद्ध में जीत तथा राज्य और सम्मान प्राप्ति के लिए इस पौराणिक स्थल की मान्यता है।

9. हनुमद्धाम के हनुमान जी मुजफर नगर यहां की मूर्ति 70 फुट ऊंची है। यहां मंगल और शनि ग्रहों से पीडित जातकों को शांति मिलती है।

10. अंलीगंज के हनुमान जी लखनऊ संतान प्राप्ति हेतु उपयुक्त स्थल है। स्वास्थ्य लाभ, माहामारी, उपद्रव आदि के शमन हेतु यहां लोग आते है।

11. कैंची धाम भवाली नीमकरोली जी महाराज द्वारा स्थापित हनुमान मंदिर प्रसिद्ध है। सर्वकष्ट निवारण तथा अकालमृत्यु से बचाव हेतु प्रसिद्ध स्थल है।

12. आंजन गुमला रांची हनुमान मंदिर महावीर हनुमान जी की जन्मस्थली गुमला में बाल हनुमान की मूर्ति प्रतिष्ठित है। विद्या प्राप्ति, पुत्र प्राप्ति, स्वास्थ्य लाभ आदि हेतु यह सिद्ध क्षेत्र है।

❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666
❋❋❋

सहज द्रवित हो जाता है कुंभ राशि वाला

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

काल पुरूष यानि मूल कुंडली में ग्यारहवें भाव में पडती हैं कुंभ। यह एकादश भाव होता है लाभ का। इसी भाव से पता लगता है कि जातक को इस जन्म में कितना लाभ मिलना है। यही भाव आय का भी होता है। कुंभ का अर्थ होता है घड़ा। जिन लोगों का जन्म कुंभ लग्न में होता है वे भाग्यशाली होते हैं। यदि कुंडली में ग्रह ठीक ठाक स्थिति में हो तो जातक बहुत धनी होता है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि कुंभ वाला अपने इस जन्म में धन से घड़ा भरने आता है। कुंभ धनिष्ठा के दो चरण, शतभिषा के चार और पूर्वभादपद नक्षत्र के तीन चरण से मिलकर बनती है। कुंभ का स्वामी शनि होता है। इसलिए कुंभ वालों का लग्नेश शनि हो जाता है। कुंभ के अलावा मकर वालों का भी शनि लग्नेश होता है। वैसे इस लग्न में जन्मे लोग मकर वालों से ज्यादा आध्यात्मिक होते हैं। एक बात समझ लेनी चाहिए कि किसी भी जीव को कुंभ तभी प्राप्त होती है जब उसका संचित कर्म फलित होने की स्थिति में होता है। यदि कुंडली में ग्रह स्थिति अच्छी हो तो कुंभ वाले धन के मामले में अन्य लग्नों से ज्यादा भाग्यशाली होते हैं।

कुंभ वाला जातक दार्शनिक विचारों का होता है। कुंभ वाले का हद्रय कोमल होता है। ऐसा जातक किसी के दुखों को देख स्वंय ही दुखी हो जाता है। वह किसी को तड़पते नहीं देख सकता है। यह अपने शत्रुओं के हित में भी सोचता है। दूसरों के भावों से प्रभावित होकर सहज ही द्रवित हो जाता है। कुंभ वाले व्यक्ति में एक खास बात यह होती है कि दूसरों की सहायता करने को सदैव अग्रसर रहता है। इस लग्न वाले की बुद्धि प्रखर होती है। इसकी स्मरण शक्ति भी काफी अच्छी होती है। यह वक्त पड़ने पर दूसरों से बहुत चतुराई से अपना काम निकाल लेने में माहिर होता है।

कुंभ लग्न का व्यक्ति प्रायः सुंदर होता है। उसके होठ सुंदर होते हैं। कुंडली में केतू की स्थिति अच्छी हो जाये तो जातक सामान्य से ज्यादा लम्बा हो जाता है। कुंभ में एकादशा और द्वितीय अर्थात् लाभ और का स्वभाव गुरू ही होते है। साधारण सी बात हैं कि जब आय और कोष का स्वामी एक ही होगा तो लाभ और उसे संचित करने का तारतम्य भी बहुत अच्छा होगा। चूँकि यह लाभ गुरू करा रहा है तो वह कुछ धन धर्म के कामों में खर्च करवाता है। जिन लोगों की कुंडली में गुरू बलवान स्थिति में होता है ऐसे जातक करोड़पति होते हैं। कुंभ वाले जातक को अपनी बात को स्वीकार न किए जाने पर बड़ा क्रोध आता है। इस लग्न वालों का क्रोध भी कुछ अजीबोगरीब तरीके का होता है। यह किस बात से नाराज हो गये हैं, पता लगाना मुश्किल होता है। फिर गुस्से में बहुत उग्र हो जाते हैं। अक्सर देखा गया है कि यह लोग गुस्से में अपना ही नुकसान कर लेते हैं। इन सब बातों के बाद एक बात जरूर ध्यान देने वाली है कि इनका गुस्सा बहुत जल्दी ठंडा हो जाता है। कुंभ वाले को यदि किसी बात में शक हो जाए तो वह उस बात की सच्चाई की तह तक पंहुच कर ही दम लेते हैं। इस लग्न वाले व्यक्ति में सफलता प्राप्त करने का एक जुनून सा होता है और वह इस सफलता को पाने के लिए बहुत मेहनत कर सकता है। कुंभ वाले व्यक्ति में लगन बहुत होती है और वे अपनी बात को बहुत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं। इस राशि के लोग

शेष पेज 19 पर.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

कामदा एकादशी व्रत

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

कामदा एकादशी व्रत चैत्र शुक्ल पक्ष एकादशी के दिन किया जाता है। एक समय पाण्डुनन्दन धर्मावतार महाराज युधिष्ठिर ने त्रिलोकनाथ, यशोदा माँ के दुलारे, वसुदेव, देवकी नन्दन भगवान श्री कृष्ण के श्री चरणों में प्रणाम कर विनयपूर्वक प्रश्न किया कि– हे भगवान्! चैत्र मास के शुक्ल पक्ष में स्थित कामदा एकादशी का विधान व महात्मय क्या है? कृपा करके बताइये।

अनन्त अनन्त गुण विभूषित भगवान् श्रीकृष्ण ने कहा– राजन् एक समय यही प्रश्न राजा दिलीप ने अपने गुरूदेव वशिष्ठ जी से किया था। तब उन्होंने जैसा उत्तर दिया था वही मैं आपकी जिज्ञासा शान्त करने हेतु श्रवण कराता हूँ आप एकाग्रचित हो श्रवण करें।

महर्षि वशिष्ठ जी बोले– हे राजन्! चैत्र माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी का नाम कामदा है। यह पापों को भस्म करने वाली है। इसके व्रत से कुयोनि छूट जाती है और अन्त में स्वर्ग की प्राप्ति होती है। पुत्र को प्राप्त कराने वाली एंव सम्पूर्ण कामनाओं को पूर्ण करने वाली है।

कामदा एकादशी के व्रत में पहले दिन (दशमी के मध्याह्न में जौ, गेहूँ और मूँग आदि का एक बार भोजन करके भगवान विष्णु का स्मरण करे। दूसरे दिन (एकादशी को) प्रातः स्नानादि करके यह संकल्प करके जितेन्द्रिय होकर श्रद्धा, भक्ति और विधिसहित भगवान् का पूजन करे। उत्तम प्रकार के गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य आदि समर्पित करके नीरांजन करे। तत्पश्चात् जप, हवन, स्तोत्रपाठ और मनोहर गाना–बजाना और नृत्य करके प्रदक्षिणा और दण्डवत् करे। इस प्रकार भगवान की सेवा और स्मरण में दिन व्यतीत करके रात्रि में कथा, वार्ता, स्तोत्र पाठ तथा भजन, संकीर्तन आदि के साथ जागरण करे। फिर द्वादशी को पुनः भगवान विष्णु का पूजन करके ब्राह्मण भोजनादि कार्यो को पूर्ण करने पर सब प्रकार के पाप दूर होते हैं। इसकी कथा महात्म्य इस प्रकार है–

!!कथा!!

प्राचीन काल में सुवर्ण और रत्नों से सुशोभित नागपुर नगर के पुण्डरीक राजा के ललित और ललिता नाम के गन्धर्व–गन्धर्विणी गायन विद्या में बड़े प्रवीण थे। पुण्डरीक राजा बड़ा ही विलासी था। उसकी सभा में अनेक अप्सरायें, किन्नर तथा गन्धर्व नृत्य व गायन किया करते थे।

एक बार ललित नामक गन्धर्व जब राजा की राज सभा में नृत्य गान कर रहा था। सहसा उसे अपनी सुन्दरी ललिता की याद आ गई, जिसके कारण उसके नृत्य, गीत तथा लय में अरोचकता आ गयी। कर्कोटक नामक नाग यह रहस्य जान गया तथा राजा से कह सुनाया। इस पर क्रोधातुर होकर पुण्डरीक राजा ने ललित को राक्षस हो जाने का श्राप दे दिया। ललित सहस्त्रों वर्ष तक राक्षस योनि में अनेक लोकों में घूमता रहा। इतना ही नहीं उसकी सहध र्मिणी ललिता भी उन्मत वेश में उसी का अनुकरण करती रही। ललिता अपने प्राणबल्लभ ललित का ऐसा हाल देखकर बहुत दुखी हुई। वह सदैव अपने पति के उद्धार के लिए सोचने लगी कि मैं कहाँ जाँऊ और क्या करूँ। एक दिन वह दोनों घूमते–घूमते विन्ध्याचल पर्वत के शिखर कर स्थित ऋष्यश्रंग ऋषि के आश्रम पर पहुँचे। इनकी करूण तथा संवेदनशील स्थिति देखकर मुनि को दया आ गई और उन्होने चैत्र शुल्क पक्ष की कामदा एकादशी व्रत करने का आदेश दिया। ऋषि के बताए गए नियमानुसार ललिता ने प्रसन्नतापूर्वक व्रत का पालन किया। पुनः भगवान् से प्रार्थना करने लगी कि हे प्रभो। मैंने जो व्रत किया है उस व्रत के प्रभाव से मेरे पति राक्षस योनि से मुक्त हो जावें। एकादशी का फल देते ही उसका पति राक्षस योनि से मुक्त हो पूर्व स्वरूप को प्राप्त हो गया। दोनों पुष्पकविमान में बैठकर स्वर्ग लोक को चले गए।

अपने कर्तव्य भूल के कारण मानव को अनेक विपत्तियाँ सहन करनी पडती हैं। अतः मानव को अपने कर्तव्य कर्म का ठीक से पालन करना ही श्रेयष्कर है।

श्रीकृष्ण भगवान् ने कहा– हे धर्मराज युधिष्ठिर इस व्रत को विधिपूर्वक करने से दैहिक–दैविक–भौतिक तीनों प्रकार के पाप

शेष पेज 18 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

वास्तु अनुसार ड्राइंगरूम करें फिट

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

जब हम ड्राइंग रूम की बात करते हैं तो इसका अर्थ उस स्थान से होता है जो हर किसी को अपनी ओर आकर्षित करे। ड्रांइग रूम यानी स्वागत कक्ष वह स्थान है, जहा मेहमानों की आवभगत की जाती है। ड्राइंग रूम का वातावरण खुला तथा मैत्रीपूर्ण होना अति आवश्यक है ताकि आगंतुक का मन शांत तथा प्रसन्न रह सके। जब तक अतिथि का मन शांत तथा प्रसन्न नहीं होगा, तब तक वार्तालाप में प्रेम की कमी ही रहेगी। दोनों ही लोग केवल औपचारिकताएं ही निभाते रहेगें।

स्वागत कक्ष का प्रयोग प्रतिदिन करना चाहिए। कुछ लोगों के यहाँ पर कभी–कभी ही स्वागत कक्ष का ही प्रयोग होता है। स्वास्थ्य एव धनदायक उत्तरदिशा बैठक के लिए सर्वोतम स्थान है। उत्तर दिशा का ग्रह बुद्धि, संचार, सामाजिक क्रियाकलापों, मनोरंजन और अहिंसक अभिरूचियों को प्रदान करने वाला होता है।

चन्द्रमा मन का आधिपत्य करता है। चन्द्रमा सौम्य, संवेदनशील, सेवाभावी और तीव्रतम चलने वाला ग्रह है। उत्तर दिशा में ड्राइंग रूम होने से व्यक्ति मेहमानों का उदार भाव से स्वागत करने में तत्पर रहता है। धन और आसक्ति का स्वामी कुबेर उत्तर दिशा का स्वामी है। हमारा असली धन हमारे मित्र, सगे सबंधी, सहकर्मी, व्यवसायिक–सबंधी आदि हैं। बृहस्पति ग्रह का सबंध ज्ञान, पढ़ने लिखने और सत्व गुणों से है। यह उत्तर दिशा कर्क राशि में उच्च की हो जाती है। इस दिशा में स्थित बैठक को आराम से बैठक और पुस्तकालय दोनों के लिए मिश्रित रूप से प्रयोग किया जा सकता है।

वायव्य कोण में करें पार्टी – पूर्व दिशा प्रेरणा, ज्ञान बोध और सूर्योदय की दिशा है। यदि आप प्रतिदिन नए लोगों से मिलते हैं तो पूर्व दिशा में ड्राइंग रूम बनाना ज्यादा श्रेष्ठ होगा। पूर्व दिशा का ड्राइंग रूम सामाजिक कार्य कर्ताओं, राजनेताओं और बड़े व्यापारियों के लिए उत्तम है। बैठक के लिए वाव्यय और ईशान अन्य शुभ दिशाएं हैं। वायव्य वायु तत्व की दिशा है। वायुतत्व राजसी ऊर्जा से भरा है। वायु की प्रकृति बैठक की कार्यप्रणाली से मेल खाती है। यदि आपकी बैठकें और पार्टियां देर तक चलती हैं तो बैठक के लिए वायव्य विशेष रूप से शुभ है। यहाँ बैठक होने पर मेहमान ज्यादा देर तक नहीं टिकते हैं। वायु की ऊर्जा उन्हें अधिक देर तक नहीं रूकने देती है। ईशान जल तत्व की दिशा है। ईशान शान, सुखद स्थान है यदि हृद्रय से अतिथि को देवता तुल्य मानते हो तो स्वागत कक्ष के लिए ईशान कोण अति उत्तम है।

फर्श नीची न हो – ड्राइंग रूम की फर्श आस पास की जमीन से नीची नहीं होनी चाहिए कहने का आशय यह है कि अतिथि को ड्राइंग रूम में आते समय अपना कदम

नीचे की ओर न रखना पड़े। कक्ष का मुख्य द्वार उत्तर या पूर्व दिशा की ओर बनाना ही श्रेष्ठ है। ड्राइंग रूम में द्वारों की संख्या सम ही रखनी चाहिए। विषम दरवाजे होने से वातावरण में विषाक्तता और अंशाति रहती है। स्वागत कक्ष के मध्य से कोई रास्ता नहीं होना चाहिए। किसी से वार्तालाप करते समय बीच से गुजरना बहुत खराब होता है।

भारी फर्नीचर दक्षिण में रखें – ड्राइंग रूम में उन वस्तुओं की संख्या कम होनी चाहिये जिनका प्रयोग न होता हो। गोलाकार कोनों वाला वर्गाकार व आयताकार फर्नीचर शुभ रहता है। भारी फर्नीचर को नैऋत्य, दक्षिण या पश्चिम दिशाओं में रखना चाहियें।

केन्द्र में बहुत भारी वस्तुंए नहीं रखनी चाहिए। सोफा या कुर्सियों के एकदम पीछे कोई द्वार या खिड़की न हो तो अच्छा रहता है। पीठ की ओर ठोस दीवार होने से व्यक्ति सुरक्षित, तनावरहित और आत्मविश्वास से भरा रहता है। जहाँ तक हो सके परिवार के मुखिया को ड्राइंग रूम के मुख्य द्वार की ओर अपना मुख करके बैठना चाहिये। किताबों की अलमारी आदि अन्य भारी फर्नीचर रखने के लिए दक्षिण या पश्चिम को चुनें।

❋❋❋

विद्या प्राप्ति के योग, समस्या व समाधान

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

शिक्षा से जातक का चारित्रिक विकास होता है। शिक्षा ही सही ढंग से जीवन जीना सिखाती है। कुंडली के द्वितीय, चतुर्थ व पंचम भाव से शिक्षा का विचार किया जाता है। इन भावों भावेशों व इनके कारकों का कुंडली में उच्च राशि, उच्च नवांश स्वराशि मूल त्रिकोण राशि में होने से अच्छी शिक्षा प्राप्त करता है। इन भावों भावेशों व कारकों के अनुसार ही जातक की शिक्षा में रूचि एंव उसकी शैक्षिक उपलब्धियों की प्राप्ति होती है।

द्वितीय भाव से धन, कुटुम्ब, रत्न, दांयी आंख, वाणी, मुख, विद्या, एंव भाषण का विचार किया जाता है।

चतुर्थ भाव से सुख, माता, भवन, वाहन, भाई, खेत, उपवन व मन, विद्या, बुद्धि का विचार किया जाता है।

पंचम भाव से पुत्र, कला कौशल, गर्भ स्थिति, विद्या, बुद्धि, देव सेवा के बारे में विचार किया जाता है। चतुर्थ भाव मन का है एंव चंद्र मन का कारक है। जब चंद्र, चतुर्थेश व चतुर्थ भाव में सूर्य, राहु या शनि का प्रभाव पड़ता है, तो जातक का मन विद्याध्ययन में नहीं लगता है एंव पढ़ाई छूट जाती है क्योंकि सूर्य, शनि व राहु में पृथकता का गुण विद्यमान है। ये अपनी दशा अन्तर्दशा में अपना विशेष प्रभाव दर्शाते हैं विद्याध्ययन के समय इनकी महादशा प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को भी विद्या से विमुख कर असफल कर देती है या बीच में किसी कारण वश विद्यालय छोड़ देता है। इन भावों के विषय में भावार्थ रत्नाकर में लिखा है कि सूर्य व बुध पंचम भाव में स्थित हों तो जातक ज्योतिष शास्त्र में प्रवीण होता है क्योकि ये दोनों सूक्ष्म बुद्धि के प्रतीक है ज्योतिष में भी सूक्ष्म बुद्धि की आवश्यकता होती है। यदि सूर्य और राहु संयुक्त हो तो जातक विष वैद्य होगा। सूर्य व राहु दोनों का डाक्टर से सम्बंध है वहीं राहु विष कारक होने से विष वैद्य बना रहा है। आज शिक्षा के क्षेत्र में भी नित नये–नये क्षेत्र सामने आ रहे है ऐसी स्थिति में शिक्षा संबंधी विचार करते समय ग्रहों को आधुनिक दृष्टिकोणों को मध्य नजर रखते हुए नए सिरे से परखना होगा। इस हेतु विभिन्न ग्रहों का विषयानिर्धारण डॉ. मिश्र द्वारा किया गया है जो निम्न प्रकार हैः–

सूर्य– ऊर्जा संसाधन व परमाणु क्षेत्र, चिकित्सा विज्ञान।

चन्द्र– चिकित्सा विज्ञान, कृषि, औषधि, नृत्य, वाद्य ललित विद्या।

मंगल–राजनीति, विज्ञान, भूगोल, जियोलॉजी, वास्तु, कला विज्ञान।

बुध– कवि, वाणिज्य, लेखन, चिकित्सा, सीए, टाईप, ज्योतिष, होटल प्रबन्ध, वेद, व्याकरण, गणित, आदि।

शुक्र– रति विज्ञान, लेखन, गीत, संगीत, नृत्य, फैशन, विज्ञान आदि।

शनि– हस्त कला, शनि रोग जनित चिकित्सक, जिल्दबाज, धातु विज्ञान

राहु– मनोविज्ञान, गणित, उर्दु, अरबी, फारसी, तंत्रमंत्र, ज्योतिष आदि।

केतु– गणित, धर्मशास्त्र, मनोविज्ञान, चिकित्सा विज्ञान आदि

❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

धन-प्राप्ति योग

सीताराम सिंह,
एम. ए,
एल.एल.एम. एस्ट्रो कॉऊसलर

कुण्डली का लग्न भाव जीवन के सभी शुभ व अशुभ फलों का आश्रय होता है। लग्न एक साथ केन्द्र व त्रिकोण भाव होने से लग्नेश योगकारक जैसा शुभ फल दायक होता है। लग्न भाव का बल लग्नेश के बलानुसार होता है। इनकी बलवत्ता व्यक्ति के भाग्य, सुख, धन, आयु आदि शुभ फलों के प्रचुर मात्रा में भोग को दर्शाता है।

अतः धन–समृद्धि प्राप्ति के लिये सर्वप्रथम लग्नेश का बलवान, तथा शुभ प्रभावी, होना आवश्यक होता है। साथ ही कुण्डली के धन–द्योतक भाव द्वितीय (धन) भाव, पंचम व नवम भाव (लक्ष्मी) तथा एकादश भाव (लाभ) व उनके भावेशों का आपसी सम्बन्ध शुभ भाव (केन्द्र व त्रिकोण) में होने पर अधिक धन प्राप्ति में सहायक होता है। लग्न और चन्द्र दोनों से आंकलन सटीक रहता है।

श्री रामानुजाचार्य द्वारा रचित भावार्थ रत्नाकर के धन योग अध्याय के अनुसार–

धनेशे पंचमस्थे च पंचमेशो धनो यदि
धनपे लाभगे वापि लाभेशो धनपो यदि।
पंचमेशो पंचमे वा भाग्ये भाग्याधिपे यदि।
विशेष धनयोगाश्चेत्याहुजातक को विदाः।

अर्थात् यदि द्वितीयेश और पंचमेश का स्थान परिवर्तन हो या द्वितीयेश लाभ भाव में हो और लाभेश द्वितीय भाव में स्थित हो, या पंचमेश और नवमेश अपने भाव में हों तो जातक को विशेष धन की प्राप्ति होती है।

उपरोक्त श्लोक कुछ महत्वपूर्ण सूत्र प्रतिपादित करता हैः

1. धन के द्योतक भाव व भावेशों का आपसी सम्बन्ध विशेष धन दायक होता है, जैसा धनेश के लाभ भाव में होने से या लाभेश के धन–भाव में होने पर विशेष धन की प्राप्ति होती है। इसी प्रकार धनेश और लाभेश दोनों की शुभ लग्न भाव में युति प्रचुर धन दायक होती है।

2. धनेश और पंचमेश का व्यत्यय धनप्रद कहा गया है, परन्तु धनेश व नवमेश के व्यत्यय का कोई उल्लेख नहीं है। इसका मूल कारण है कि इनका व्यत्यय होने पर द्वितीयेश निज द्वितीय भाव से अष्टमस्थ होकर धन प्राप्ति को कम करेगा तथा नवमेश भी अपने नवम् भाव से षष्ठस्थ होकर भाग्य में कमी करेगा। अतः इनका व्यत्यय शुभ फलदायी नहीं बताया गया है।

3. श्लोक के अन्तिम भाग में तीसरा सूत्र यह है कि एक से अधिक धन–द्योतक भावेशों की अपने अपने भाव में स्थिति भी उनके साझेगुण की वृद्धि करती है, अर्थात् प्रचुर मात्रा में धन देती है।

4. अगले श्लोक में ग्रथांकार ने स्पष्ट कर दिया है कि ग्रहों की धन–सादृश्यता न होने पर पास्परिक योग विशेष धन दायक नहीं होता है।

धन लाभाधिपत्योश्च व्ययेशेन संस्थिति
संवन्धो यदि विद्यते धनाधिक्य न विद्यते।

अर्थात् यदि द्वितीयेश और लाभेश की युति व्ययेश के साथ हो तो जातक धनी नहीं होगा।

इसी प्रकार षष्ठेश व अष्टमेश की युति भी धन की न्यूनता करेगी। साथ ही धन–द्योतक भावेशों की अशुभ (षष्ठ, अष्टम् व द्वादश) भाव में स्थिति धन के नाश द्वारा निर्धनता देगी।

केमद्रुम योग (चन्द्रमा के दोनों और कोई ग्रह न होने पर) भी धन–हानि दर्शाता है। ❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

ज्योतिषम् वेदानां चक्षुः

सुरेश अग्रवाल
आगरा

भारतीय संस्कृति का मूलाधार वेद हैं। वेदों के छः अंग हैं। शिक्षा (उचित उच्चारण के लिए), कल्प (कर्मकाण्ड और यज्ञ के लिए), व्याकरण (शब्दों की रूप सज्जा के लिए), निरूक्त (अर्थ ज्ञान के लिए), छन्द (मन्त्रों की व्याख्या के लिए) और ज्योतिष (काल निर्धारण के लिए)। वेदों तथा अन्य शास्त्रों में निर्दिष्ट धर्म–कर्म, मुहुर्त के समय पर ही सम्पन्न किये जाते हैं, जिसकी जानकारी हमें ज्योतिष शास्त्र ही दे सकता है। ज्योतिष शास्त्र प्रत्यक्ष शास्त्र है, जिसके साक्षी सूर्य तथा चन्द्रमा हैं। महर्षि पाणिनी ने इस शास्त्र को **वेद का नेत्र** बताया है। जैसे शरीर में नेत्र के बिना सब कुछ व्यर्थ प्रतीत होता है, वैसे ही ज्योतिष शास्त्र के बिना वेद भी अधूरे हैं।

यदि ग्रह–नक्षत्रों की गणना करने वाला ज्योतिर्विद न हो, तो मुहूर्त समय, तिथि, नक्षत्र, ऋतुएँ तथा अयन के बारे में कौन सावधान करेगा। राजा को वेद शास्त्र, होरा शास्त्र तथा गणित शास्त्र में निपुण ज्योतिषी का सम्मान करना चाहिए, अन्यथा काल दर्शक के अभाव में वह इधर उधर भटकता रहेगा। विजय, यश, लक्ष्मी, उत्तम भोग तथा कल्याण की इच्छा रखने वाले व्यक्ति को विद्वान और श्रेष्ठ ज्योतिषी के परामर्श के अनुसार ही कार्य करते रहना चाहिए। मर्मज्ञ ज्योतिषी का कहा हुआ प्रत्येक वचन प्रामाणिक होता है।

भूतल, अन्तरिक्ष एंव भूगर्भ के प्रत्येक पदार्थ का भूत, वर्तमान, एंव भविष्य का त्रैकालिक ज्ञान, ज्योतिष शास्त्र से ही प्राप्त किया जा सकता है। भविष्य जानने की इच्छा सभी युगों के मनुष्यों के मन में सदा प्रबल रही है, जिसकी परिणति यह ज्योतिष विज्ञान है। कृषि, व्यापार, उद्योग, सांसारिक कर्म, यज्ञ, धर्म, जीवन के संस्कार, यात्रा आदि के लिए शुभ समय के निर्धारण के लिए ज्योतिष ही एक मात्र साधन है।

ज्योतिष शास्त्र प्रारब्ध का विरोधी नहीं है, अपितु यह प्रारब्ध का ज्ञान कराकर वर्तमान को सुधारने तथा भविष्य को उज्जवल बनाने का परामर्श देता है। ज्योतिष बताता है कि पूर्व जन्मों के कर्मो से ही वर्तमान में फल प्राप्त होते हैं। भविष्य को सुधारना है, तो अच्छे कर्म करो, ग्रहों की आराधना करो, सेवा करो।

समस्त ग्रह–उपग्रह तुम्हारे कर्मो को देख रहे हैं, जहाँ तुम जरा सा भी सत्मार्ग से हटोगे, तो समझो तुम्हारा समय खराब आने वाला है, अतः सावधान हो जाओ। मानो वे ग्रह सचेत करते हैं कि संसार में आये हो तो ठीक से रहो। अच्छे कर्म करो। तुम पाओगे कि ज्यों ही तुम ठीक रास्ते पर चलने लगते हो, सभी ग्रह, नक्षत्र, देव आदि अनुकूल होने लगते हैं। ग्रह भी देव रूप हैं–किसी को कष्ट नहीं देते। सभी को अपने कर्मो के अनुसार ही फल प्राप्त होता है। जब हमभटक जाते हैं, तो ज्योतिष ही हमें उँगुली पकड़कर राह दिखाता है।

ज्योतिष शास्त्र में पंचांग का महत्वपूर्ण स्थान है। तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण की जानकारी प्राप्त करने के लिए पंचांग का ही आश्रय लेना पड़ता है। जहाँ उपरोक्त पाँच अंगो का वर्णन होता है– उसे ही पंचांग कहते हैं। पंचांग का आधार सूर्योदय और सूर्यास्त है। पंचाग पृथक पृथक अक्षांश देशान्तर पर बनाये जाते है– लेकिन विद्वानों द्वारा स्थानीय पंचांग के प्रयोग को ही श्रेष्ठतम बताया गया है। पंचांग का अध्ययन ठीक प्रकार से करना चाहिए, अन्यथा ग्रह, तिथि, वार आदि का आंकलन शुद्ध नहीं किया जा सकेगा।

ज्योतिष शास्त्र में रत्न विज्ञान का सर्वोच्च स्थान होता है। ग्रहों की रश्मियाँ अपनी तरह के गुण वाले रत्नों की ओर स्वतः

शेष पेज 19 पर.....

मीडिया नें भी बढ़ाया हमारा मनोबल - धन्यवाद

16 **अप्रैल** - 15 **मई**

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-प्रियजनों से मनमुटाव होने की संभावना रहेगी। कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। यात्रा का सुख प्राप्त होगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– आर्थिक हानि होने की संभावना रहेगी। यात्रा में चोट लगना संभव है। इस मास में आपको राज भय रहेगा। मानसिक अशांति बनी रहेगी। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– कारोबार में बदलाव होने की संभावना रहेगी। मानसिक अशांति बनी रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। हानि होने की भी संभावना रहेगी। सन्तान पक्ष से चिन्ताए बनी रहेगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। आपको अपनी पत्नि से लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय रहेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में पित्तविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। कारोबार ठीक चलेगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। इस मास में आपको राज भय रहेगा। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा। घरेलू परेशानियां लगी रहेंगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस मास में प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। वायुविकार जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे। कार्यान्तर से लाभ मिलेगा। मानसिक तनाव रहेगा। पत्नि का पूर्ण सुख मिलेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। सन्तान पक्ष अच्छा रहेगा। फालतू की चिन्ता में डूबे रहेगें। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आपको सन्तानपक्ष से अच्छी सूचनाओं की प्राप्ति होगी। कारोबार में रूकावटें आयेंगी एवं नुकसान होने की संभावना रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। घरेलू परेशानियां निरंतर रहेंगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। प्रियजनों से मनमुटाव रहेगा। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। स्थानान्तर का विचार होगा। नेत्र कष्ट जैसे रोग से ग्रस्त रहेंगे।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आर्थिक लाभ का सुख प्राप्त होगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई-नई योजनाओं से आपको हानि प्राप्त होगी। प्रियजनों का पूर्ण सुख मिलेगा। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम नहीं रहेगा। धन लाभ का सुख प्राप्त होगा। शत्रु पक्ष कमजोर रहेगा। मानसिक अशांति बनी रहेगी। पत्नि की तरफ से चिन्ता रहेगी। सम्पत्ति का सुख प्राप्त होगा।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अप्रैल	**मई**
18 श्री गणेश चतुर्थी व्रत **20** गुरु तेजबहादुर जयंती **21** गुरु अर्जुन देव जं. **22** कालाष्टमी(सीताष्टमी) **25** वरुथिनी एकादशी व्रत **26** प्रदोष व्रत **29** अमावस्या(स्नान/दान),	**1** विश्व मजदूर दि., श्री परशुराम जयंती (अक्षय तीज) **2** श्री विनायक चौथ **4** श्री आद्य शंकराचार्य जं. **5** श्री रामानुजाचार्य जयंती **7** दुर्गाष्टमी (श्री बगलामुखी जं.), रविन्द्र नाथ टैगोर जयंती **8** सीता नवमी **10** मोहिनी एकादशी **12** प्रदोष व्रत, श्री नरसिंह जयंती **14** बुद्ध पूर्णिमा, **15** श्री नारद जयंती

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अप्रैल– नही है। **मई**– 2,10,12,14

गृह प्रवेश मुहूर्त

अप्रैल– नही हैं। **मई**– 13

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अप्रैल–18, 19, 22, 24, 25, 26

मई– 12, 13, 15

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अप्रैल– 24, 25, 28

मई– 02, 09, 12, 13

सर्वार्थ सिद्ध योग

अप्रैल	**मई**
17 ता. 22:39 से 18 ता. 21:51 तक 20 ता. सू.उ. से 19:31 तक 27 ता. सू.उ. से 10:02 तक 29 ता. सू.उ. से 9:05 तक 30 ता. 9:17 से 29:40 तक	05 ता. 18:11 से 29:34 तक 06 ता. 21:04 से 29:34 तक 11 ता. सू.उ. से 29:30 तक 15 ता. 6:44 से 29:28 तक

16 मई - 15 जून

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– आपको अपनों का सहयोग मिलेगा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। संबधों में या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कारोबार में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। भाग्य से सहयोग नहीं मिलेगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मित्रों से अनबन की स्थिति बनेगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। दुर्घटना होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेगें। शुभ कार्यो में मन लगेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–प्रियजनों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। आर्थिक लाभ होने की सभांवना रहेगी। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेगी।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता लगी रहेगी। प्रियजनों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– इस मास में शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक हानि होने की सभांवना रहेगी। मित्रों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– आर्थिक लाभ होने पर भी हानि का भय रहेगा। व्यवसाय में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति से लाभ होने की संभावना रहेगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। अपमान होने का भय रहेगा। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- फालतू के विवादों में न पड़े। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। मास का अन्त शुभ रहेगा।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- आर्थिक लाभ होने पर भी हानि का भय रहेगा। व्यवसाय में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

मई	जून
17 श्री गणेश चतुर्थी व्रत **21** राजीव गांधी पुण्य तिथि, शीतलाष्टमी पूजन **24** अचला (अपरा) एकादशी व्रत **26** प्रदोष व्रत **27** पं. नेहरू पुण्य दिवस **28** अमावस्या, वट सावित्री व्रत पूजन **31** रम्भा तीज व्रत	**1** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **4** स्कन्द षष्ठी **5** भानु सप्तमी **6** दुर्गाष्टमी(धूमावती जं.) **7** माहेश्वरी नवमी **8** गंगा दशहरा **9** निर्जला एकादशी व्रत **10** प्रदोष व्रत, चम्पक द्वादशी **13** पूर्णिमा, वट सावित्री व्रत, संत कवीर दास जं.**14** हरगोविन्द सिंह जयंती

ग्रहारम्भ मुहूर्त

मई– 16, 23, 25
जून– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

मई– 16, 22, 23, 25। **जून**– नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

मई–20, 22, 23, 25
जून– नही है।

नामकरण संस्कार मुहूर्त

मई– 31
जून – 3

सर्वार्थ सिद्ध योग

मई	जून
19 ता. 22:11 से 29:25 तक 25 ता. 16:14 से 29:23 तक 27 ता. 16:57 से 29:23 तक 28 ता. सू.उ. से 29:22 तक	02 ता. सू.उ. से 28:50 तक 03 ता. सू.उ. से 31:48 तक 08 ता. सू.उ. से 16:48 तक 11 ता. 16:25 से 12 ता. 14:53 तक 15 ता. 7:59 से 16 ता. 05:28 तक

जब हनुमान से हारे शनि

श्रीमती पूनम दत्त
आगरा

महान पराक्रमी हनुमान अमर हैं। पवन पुत्र हनुमान रघुकुल के कुमारों के कहने से प्रतिदिन अपनी आत्मकथा का कोई भाग सुनाया करते थे।

उन्होने कहा कि मैं एक बार संध्या समय अपने आराध्य श्री राम का स्मरण करने लगा तो उसी समय ग्रहों में पाप ग्रह, मंद गति सूर्य पुत्र शनि देव पधारे। वह अत्यंत कृष्ण वर्ण के भीषणाकार थे। वह अपना सिर प्रायः झुकाये रखते हैं। जिस पर अपनी दृष्टि डालते हैं वह अवश्य नष्ट हो जाता है। शनिदेव हनुमान के बाहुबल और पराक्रम को नहीं जानते थे। हनुमान ने उन्हें लंका में दशग्रीव के बंधन से मुक्त किया था। वह हनुमान जी से विनयपूर्वक किंतु कर्कश स्वर में बोले हनुमान जी। मैं आपको सावधान करने आया हूँ। त्रेता की बात दूसरी थी, अब कलियुग प्रारंभ हो गया है। भगवान वासुदेव ने जिस क्षण अपनी अवतार लीला का समापन किया उसी क्षण से पृथ्वी पर कलि का प्रभुत्व हो गया। यह कलियुग है। इस युग में आपका शरीर दुर्बल और मेरा बहुत बलिष्ठ हो गया है।

अब आप पर मेरी साढेसाती की दशा प्रभावी हो गई है। मैं आपके शरीर पर आ रहा हूँ।

शनिदेव को इस बात का तनिक भी ज्ञान नहीं था कि रघुनाथ के चरणाश्रितों पर काल का प्रभाव नहीं होता। करूणा निधान जिनके हृद्रय में एक क्षण को भी आ जाते हैं, काल की कला वहां सर्वथा निष्प्रभावी हो जाती है। प्रारब्ध के विधान वहां प्रभुत्वहीन हो जाते है। सर्व समर्थ पर ब्रहाव के सेवकों का नियंत्रण–संचालन–पोषण प्रभु ही करते हैं। उनके सेवेकों की और दृष्टि उठाने का साहस कोई सुर असुर करे तो स्वयं अनिष्ट भाजन होता है। शनिदेव के अग्रज यमराज भी प्रभु के भक्त की ओर देखने का साहस नहीं कर पाते।

हनुमान जी ने शनिदेव को समझाने का प्रयत्न किया, आप कहीं अन्यत्र जाएं। ग्रहों का प्रभाव पृथ्वी के मरणशील प्राणियों पर ही पड़ता है। मुझे अपने आराध्य का स्मरण करने दें। मेरे शरीर में श्री रघुनाथ के अतिरिक्त दूसरे किसी को स्थान नहीं मिल सकता।

लेकिन शनिदेव को इससे संतोष नहीं मिला। वह बोले, मैं सृष्टिकर्ता के विधान से विवश हूँ। आप पृथ्वी पर रहते हैं। अतः आप मेरे प्रभुत्व क्षेत्र से बाहर नहीं हैं। पूरे साढे बाईस वर्ष व्यतीत होने पर साढे सात वर्ष के अंतर से ढाई वर्ष के लिए मेरा प्रभाव प्राणी पर पड़ता है। किंतु यह गौण प्रभाव है। आप पर मेरी साढे साती आज इसी समय से प्रभावी हो रही है। मैं आपके शरीर पर आ रहा हूँ। इसे आप टाल नहीं सकते।

फिर हनुमान जी कहते हैं, जब आपको आना ही है तो आइए, अच्छा होता कि आप मुझ वृद्ध को छोड़ ही देते

फिर शनिदेव कहते हैं, कलियुग में पृथ्वी पर देवता या उपदेवता किसी को नहीं रहना चाहिये। सबको अपना आवास सूक्ष्म लोकों में रखना चाहिए। जो पृथ्वी पर रहेगा, वह कलियुग के प्रभाव में रहेगा और उसे मेरी पीड़ा भोगनी पड़ेगी। ग्रहों में मुझे अपने अग्रज यम का कार्य मिला हैं। मैं मुख्य मारक ग्रह हूँ। और मृत्यु के सबसे निकट वृद्ध होते हैं। अतः मैं वृद्धों को कैसे छोड़ सकता हूँ।

हनुमान जी पूछते हैं, आप मेरे शरीर पर कहां बैठने आ रहे हैं। शनिदेव गर्व से कहते हैं प्राणी के सिर पर। मैं ढाई वर्ष

शेष पेज 19 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

धूर्त ठग

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

कौआ कह रहा था– '' महर्षि गौतम के आश्रम में एक ब्राह्मण रहता था। उसने एक बार यज्ञ करने का विचार किया।

वह यज्ञ की सामग्री लेने शहर में गया। वहां से सभी सामग्री के अतिरिक्त उसने बलि के लिए एक बकरा भी खरीदना चाहा। वह बकरा खरीदने बाजार गया।

एक बकरा उसकी समझ में आ गया। उसने उसके मालिक से उसके दाम पूछे– भैया, यह बकरा कितने का है?''

बकरे का मालिक भी उसी की भांति सज्जन आदमी था। उसने ब्राह्मण को देखकर पूछा– ''पण्डितजी, आप बकरे का क्या करोगे?''

बाह्मण ने उत्तर दिया–भाई मैं एक यज्ञ करना चाहता हूं। यज्ञ के साथ मैं अपनी देवी को प्रसन्न करने के लिए बकरे की बलि दूंगा।''

''ओह! तो पण्डितजी, आपको मैं एक ऐसा बकरा दूं जिससे कि आपका खर्च मुनासिब हो और देवी भी बकरे की बलि से प्रसन्न हो। आप मेरे साथ आइये और मेरी बात मानिये, एक दूसरा बकरा आपको सस्ता दे दूंगा।'' बकरों का मालिक बोला।

सस्ते का नाम सुनकर, पण्डितजी के मुंह में पानी आ गया और वह उसके साथ चल दिये।

उसने उन्हें एक बकरा दिखाया। बकरा पण्डितजी को पसन्द आया और उन्होंने बकरे को खरीद लिया।

बकरे को वह आश्रम की ओर ले चले। कुछ दूर जाकर बकरा हठ करने लगा। यानी बकरा थक गया तथा रास्ते में बैठने लगा, तो पण्डित जी को बकरे पर दया आ गयी और उन्होने बकरे को अपने कन्धे पर लाद लिया और चल दिये।

रास्ते में उन्हें तीन धूर्तो ने देखा। बकरे को कन्धे पर लदा देखकर उनके मूंह में पानी भर आया। उन्होंने आपस में निश्चय किया, किसी भी तरह ब्राह्मण से यह बकरा ठगना है।

यह सोचकर तीनों ने परामर्श किया और एक–एक किलोमीटर के अन्तर पर खड़े हो गये।

वह ब्राह्मण ज्यों ही बकरे को कन्धे पर लादे हुए पहले धूर्त के पास से गुजरा तो बोला, ''बाह्मण देवता! कहां से आ रहे हो?''

ब्राह्मण बोला, ''शहर से आ रहा हूं।''

पहला धूर्त बोला, ''इस कुत्ते को कन्धे पर लादे कहां जा रहे हो?''

उसकी बात सुनकर ब्राह्मण चौंककर बोला, ''कुत्ता! नहीं भाई, यह कुत्ता नहीं है, यह तो बकरा है।''

इतना कहकर ब्राह्मण आगे बढ़ गया।

दूसरा धूर्त बोला– ''पण्डितजी नमस्कार! कहां जा रहे हो?''

उसकी बात सुनकर ब्राह्मण प्रत्युत्तर में बोला, '' अपने आश्रम जा रहा हूं।''

दूसरे धूर्त ने आश्चर्य से पूछा– '' अरे! आपने इस कुत्ते को कन्धे पर क्यों लाद रखा है?''

ब्राह्मण फिर चौंककर बोला, '' कुत्ता नही बकरा है।'' इतना कहकर उसने बकरे को कन्धे से नीचे उतारा और उसे भली–भांति देखकर फिर कन्धे पर रखकर आगे चल दिया।

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

चलते–चलते ब्राह्मण सोचने लगा– कहीं यह कुत्ता तो नही है! कुत्ता भी क्या बकरे जैसा होता है?''

कुत्ते की पूंछ तो काली, लम्बी होती है। हो सकता है यह किसी नई नस्ल का कुत्ता हो ।

''नहीं, यह तो बकरा है। पता नहीं ये दोनों इसे कुत्ता क्यों रहे हैं?''

ब्राह्मण सोचते–सोचते चला जा रहा था, एक किलोमीटर और चला होगा कि तीसरा धूर्त मिल गया।

तीसरे धूर्त ने उसे देखकर कहा, '' ब्राह्मण देवता, प्रणाम। कहां जा रहे हैं?''

ब्राह्मण बोला, ''आश्रम जा रहा हूं और यह यज्ञ का बकरा है।'' तीसरा धूर्त चौकंकर बोला, '' बकरा! अरे पण्डित जी यह तो कुत्ता है।''

उसकी बात सुनकर ब्राह्मण ने अचम्भे से उसको कन्धे से नीचे उतारकर ध्यान से देखा और आगे चल दिया।

चलते–चलते उसने सोचा– हो सकता है यह कुत्ता ही हो, फिर तो उस बकरे वाले ने मुझे ठग लिया–बकरा बताकर कुत्ता मुझे दे दिया। अब कुत्ते की बलि तो मैं दे नही सकता।

और एक आदमी की बात तो झूठ हो सकती है ये तीन–तीन आदमी इसे कुत्ता बता रहें हैं, तब तो यह कुत्ता ही है। पण्डित ने बकरा आश्रम से पहले ही कन्धे से उताकर छोड़ दिया और आश्रम में चला गया।

धूर्त तो इस बात की प्रतीक्षा कर रहे थे कि कब पण्डितजी बकरे को कुत्ता समझकर छोडें और वे उसे भूनकर खाएं। उन्होने बकरे को पकड़ा और तीनों उसे अपने घर ले गये तथा काटकर खा लिया।

कथा सुनकर कौआ बोला, ''सच कहते हैं, सज्जनों की बुद्धि, दुष्टों के वचनों से फिर जाती है। ऐसे लोग उसी तरह ठगे रह जाते हैं जैसे ऊंट मारा गया।''

राजा चित्रवर्ण बोला, '' यह कथा कैसी है?''

कौआ बोला, '' महाराज! आपने यह कथा नहीं सुनी, लिजिए मैं आपको यह कथा भी सुनाता हूं।'' ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अतः पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

शेष पेज 6 से आगे.....

नष्ट हो जाते हैं। इसकी कथा के पठन व श्रवण से बाजेपय यज्ञ का फल प्राप्त होता है तथा प्रभु का प्रेम व सनिध्यता मिलती है।

वरूथिनी एकादशी व्रत

सत्यवादी, सद्गुणसम्पन्न, पाण्डु नन्दन धर्मराज युधिष्ठिर ने अकारणकरूणावरूणालय व्रजवासियों के प्राणा–धार, राधिकाबल्लभ, वनमाली घनश्याम वासुदेव के श्री चरणों में प्रणाम कर पूछा– हे भगवन्! वैशाख मास के कृष्ण पक्ष में किस नाम की एकादशी होती है? उसकी महिमा बताइये।

भगवान् श्री कृष्ण बोले– राजन्! वैशाख कृष्ण पक्ष की एकादशी वरूथिनी के नाम से प्रसिद्ध है। यह इस लोक और परलोक में भी सौभाग्य प्रदान करने वाली है। इसका व्रत करने से सब प्रकार के पाप–ताप दूर होते हैं, अनन्त शान्ति मिलती है और स्वर्गादि उत्तम लोक प्राप्त होते हैं। सुपात्र ब्राहाण को दान देने, करोड़ों वर्ष तक ध्यान मग्न तपस्या करने तथा कन्यादान के फल से बढ़कर वरूथिनी एकादशी का व्रत है। व्रती को चाहिए कि वह दशमी को हविष्यान्न का एक बार भोजन करे। कांस्यपात्र, मांस और मसूरादि ग्रहण न करे। फिर एकादशी को उपवास करे, उस दिन जुआ और निद्रा आदि का त्याग रखे। रात्रि में जो जागरण करके भगवान मधुसूदन का पूजन करते हैं एवं भगवन्नाम स्मरणपूर्वक रात्रि व्यतीत कर द्वादशी को मांस कांस्यादि का परित्याग करके यथाविहित पारण करे। इस कथा का महात्मय श्रवण, करने से सौ गायों की हत्या का भी दोष नष्ट हो जाता है।

इस प्रकार यह व्रत अनन्त फलों को देने वाला है। इसके सम्बन्ध में एक सुन्दर कथा इस प्रकार हैः–

!!कथा!!

प्राचीन समय में नर्मदा नदी के तट पर मान्धाता नामक राजा अपनी प्रजा का पुत्रवत् ध्यान रखते हुए राज्य सुख भोग रहा था। राजा दानशील, सत्यनिष्ठ तथा तपस्वी था एक दिन जब राजन् जंगल में तपस्या कर रहे थे, उसी समय एक जंगली भालू आकर उसका पैर चबाने लगा। थोड़ी देर बाद वह राजा को घसीटकर वन में ले गया। तब राजा ने घबड़ाकर तापस धर्म के अनुकूल हिंसा, क्रोध न करके भगवान् मधुसूदन से प्रार्थना की। भक्तवत्सल भगवान प्रगट हुए तथा भालू को सुदर्शन चक्र से मार डाला। राजा का पैर भालू खा चुका था इससे वह बहुत ही शोकाकुल हुआ।

मधुसूदन भगवान् ने उनको दुःखी देखकर कहा कि– हे वत्स् मथुरा में जाकर तुम मेरी वाराह अवतार मूर्ति की पूजा वरूथिनी एकादशी का व्रत रहकर करो। उसके प्रभाव से तुम पुनः पूर्ण अंगों वाले हो जाओगे। जिस भालू ने तुम्हें काटा है यह तुम्हारा पूर्व जन्म का अपराध था। राजा ने इस व्रत को अपार श्रद्धा से किया तथा सुन्दर अंगों वाला हो गया।

भगवान के प्रभाव को कौन समझ सकता है? उनके प्रभाव को कोई नहीं जान सकता। जो भक्ति भाव से वरूथिनी एकादशी का व्रत करता है उसकी सम्पूर्ण मनोकामनायें तो पूर्ण होती ही हैं तथा आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक तापों से भी शान्ति प्राप्त हो जाती है। ❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

ही आकर्षित होती हैं जैसे सूर्य और मानिक, चन्द्र और मोती, मंगल और मूँगा, बुध और पन्ना, गुरू और पुखराज, शुक्र और हीरा, शनि और नीलम, राहु और गोमेद तथा केतु और लहसुनिया। जैसे एक छाता आनेवाली बरसात को तो रोक नहीं सकता, परन्तु व्यक्ति को बरसात के पानी से बचा सकता है। ठीक इसी प्रकार रत्न के धारण करने से ग्रहों के दुष्प्रभाव से रक्षा होती है। रत्न का चुनाव किसी विद्वान ज्योतिषी की सलाह से करना चाहिए और उस रत्न को किसी मान्यता प्राप्त लेबोरेट्री से परीक्षित करवा लें। ज्योतिषशास्त्रों में श्रद्धा, विश्वास और धैर्य रखने वाले व्यक्ति को समय–समय पर किसी वेदपाठी ज्योतिषी से सम्पर्क कर समाधान ढूँढते रहने चाहिए। कल्याण निश्चित है। ❋❋❋

शेष पेज 16 से आगे.....

प्राणी के सिर पर रहकर उसकी बुद्धि विचलित बनाए रखता हूँ। मध्य के ढ़ाई वर्ष उसके उदर में स्थित रहकर उसके शरीर को अस्वस्थ बनाता हूं व अंतिम ढाई वर्ष पैरों में रहकर उसे भटकाता हूँ।

फिर शनिदेव हनुमान जी के मस्तक पर आ बैठे तो हनुमान जी के सिर पर खाज हुई इसे मिटाने के लिए हनुमान जी ने बड़ा पर्वत उठाकर सिर पर रख लिया।

शनिदेव चिल्लाते हैं, यह क्या कर रहे हैं आप। फिर हनुमान जी कहते हैं, जैसे आप सृष्टिकर्ता के विधान से विवश हैं वैसे मैं भी अपने स्वभाव से विवश हूं। मेरे मस्तक पर खाज मिटाने की यही उपचार पद्धति है। आप अपना कार्य करें और मैं अपना कार्य।

ऐसा कहते ही हनुमान जी ने दूसरा पर्वत उठाकर सिर पर रख लिया। इस पर शनिदेव कहते हैं, आप इन्हें उतारिए, मै संधि करने को तैयार हूँ। उनके इतना कहते ही हनुमान जी ने तीसरा पर्वत उठाकर सिर पर रख लिया तो शनि देव चिल्ला कर कहते हैं, मैं अब आपके समीप नहीं आऊँगा। फिर भी हनुमान जी नहीं माने और चौथा पर्वत उठाकर सिर पर रख लिया। शनिदेव फिर चिल्लाते हैं पवनकुमार **त्राहि माम ताहि माम रामदूत आजनेयाय नमः** मैं उसको भी पीड़ित नहीं करूँगा जो आपका स्मरण करेगा। मुझे उतर जाने का अवसर दें।

हनुमान जी कहते हैं, बहुत शीघ्रता की। अभी तो पांचवा पर्वत बाकी है। और इतने में ही शनि मेरे पैरों में गिर गए, और कहा मै सदैव आपको दिये वचनों को स्मरण रँखूगा।

आघात के उपचार के लिए शनिदेव तेल मांगने लगे। हनुमान जी तेल कँहा देने वाले थे। वही शनिदेव आज भी तेलदान से तुष्ट होते हैं। ❋❋❋

शेष पेज 5 से आगे .....

बातचीत में अपनी पूरी क्षमता प्रस्तुत करते हैं। इन के लिए शुक्र बहुत शुभ फल देने वाला होता है। शुक्र नवम और चतुर्थ का स्वामी अर्थात भाग्य और सुख का स्वामी होता है। भाग्येश होने के कारण यह परमकारक ग्रह हो जाता है। जब कुंभ वाले को शुक्र की महादशा या अर्न्तदशा मिलती है तब उस समय कुंभ वाले को शुभ फल प्राप्त होता है। इस लग्न में मंगल दशमेश और तृतीयेश होने के कारण वे अपने कर्म को साहस के साथ करते हैं। इस राशि के जातक को अपने कर्म में सफलता अपने जन्म स्थान के बाहर ही मिलती है और यह जन्मस्थान से दूर ज्यादा साहस के साथ काम करने में सक्षम होते हैं।

कुंभ वाले जातकों की सरकार से अच्छी बनती है या फिर सरकार की नीतियों का समर्थन करते है। इसके पीछे कारण यह है कि कंभ लग्न वाले का प्राकृतिक मित्र सिंह राशि वाला होता है और सिंह का अर्थ है राजा या सरकार। कुंभ वाले जातक भाग्य पर कर्म से ज्यादा विश्वास करते हैं। शनि लग्नेश होने के कारण इस लग्न वालों को नीलम रत्न धारण करना चाहिए। नीलम के धारण करने से इनमें समझदारी, प्रतिरोधक क्षमता और आत्मबल भी बढ़ जाता है। शुक्र परम योगकारक ग्रह है, इसलिए हीरा रत्न धारण करने से कुंभ वालों को बहुत लाभ होता है। हीरे को पहनने से भाग्य में वृद्धि तो होती ही है साथ ही भौतिक सुखों में भी बढोत्तरी होती है। पन्ना और माणिक कों कुंडली के ग्रहों की स्थिति को देखने के बाद ही धारण करना चाहिए। ❋❋❋

विशेषताऐं

यह किसी को तड़पते नही देख सकते हैं, मददगार होते हैं।

किस बात पर नाराज हो गये हैं, यह जल्दी पता नहीं लगने देते।

यह अपने शत्रुओं के हित में भी सोचते हैं।

बुद्धि प्रखर और स्मरण शक्ति अच्छी होती है।

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड **(Lab Certified)** कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की **100%** शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262